NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 14-02-2026

विषय सूची

भारत का यह विश्वास था कि पंचशील समझौते ने चीन के साथ सीमा-विवाद का समाधान कर दिया: CDS

विकेंद्रीकरण के माध्यम से ग्रामीण रूपांतरण

खंडित वैश्विक व्यवस्था में भारत की विदेश नीति का पुनर्परिनियोजन

2070 तक भारत की ऊर्जा संरचना में नवीकरणीय स्रोतों का प्रभुत्व

जनसंख्या-स्तरीय प्रभाव हेतु भारत का कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) स्टैक

संक्षिप्त समाचार

केरल द्वारा बैसिलस सबटिलिस(Bacillus Subtilis) को 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित

चतुष्कोणीय सुरक्षा संवाद (Quad)

अफ्रीकी संघ

सेवा तीर्थ

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) जनवरी, 2026 (अस्थायी) आधार वर्ष 100=2024 जारी

मैंग्रोव क्लैम

लीड बैंक योजना (LBS) हेतु संशोधित दिशा-निर्देश

भारत का यह विश्वास था कि पंचशील समझौते ने चीन के साथ सीमा-विवाद का समाधान कर दिया: CDS

संदर्भ

- चीफ़ ऑफ़ डिफ़ेन्स स्टाफ़ (CDS) ने उल्लेख किया कि भारत का मानना था कि 1954 का पंचशील समझौता उत्तरी सीमा प्रश्न का प्रभावी समाधान करता है, यद्यपि चीन का दृष्टिकोण भिन्न था।

पंचशील समझौता

- 1954 में भारत ने तिब्बत को चीन का भाग स्वीकार किया और दोनों देशों ने पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- पंचशील समझौते में पाँच सिद्धांतों का उल्लेख किया गया था:
  - एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का परस्पर सम्मान।
  - परस्पर आक्रामकता न करना।
  - एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।
  - समानता और पारस्परिक लाभ के लिए सहयोग।
  - शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।
- इसका उद्देश्य व्यापार और मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देना था, जो द्विपक्षीय संबंधों का आधार बना।
  - इसके साथ ही भारत ने यह मान लिया कि उसने अपनी उत्तरी सीमा का समाधान कर लिया है।
- 2025 में चीनी राष्ट्रपति ने रेखांकित किया कि पंचशील को दोनों देशों द्वारा संरक्षित और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
  - यह उस समय हुआ जब भारत और चीन ने अपने संबंधों को पुनर्स्थापित किया तथा सात वर्षों बाद प्रधानमंत्री मोदी ने चीन का दौरा किया।

भारत-चीन सीमाएँ

- भारत वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) को 3,488 किमी लंबा मानता है, जबकि चीन इसे लगभग 2,000 किमी मानता है।
- यह तीन क्षेत्रों में विभाजित है:
  - **पूर्वी क्षेत्र:** अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम।
  - **मध्य क्षेत्र:** उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश।
  - **पश्चिमी क्षेत्र:** लद्दाख।
- **पश्चिमी क्षेत्र या अक्साई चिन क्षेत्र:** 1962 युद्ध के बाद चीनी सरकार ने इसे शिनजियांग क्षेत्र का स्वायत्त हिस्सा घोषित किया, जबकि यह मूलतः जम्मू-कश्मीर राज्य का हिस्सा था।
- **मध्य क्षेत्र:** यह अपेक्षाकृत कम विवादित है, किंतु हाल के डोकलाम गतिरोध और नाथु ला पास व्यापारिक मुद्दों ने तनाव उत्पन्न किया।
- **पूर्वी क्षेत्र या अरुणाचल प्रदेश:** मैकमोहन रेखा ने इस क्षेत्र में भारत और चीन को विभाजित किया था, किंतु 1962 युद्ध में चीनी सेना ने 9,000 वर्ग किमी क्षेत्र पर नियन्त्रण कर लिया।
  - एकतरफा युद्धविराम की घोषणा ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से पीछे हटने पर बाध्य किया।
  - हालाँकि चीन इस क्षेत्र को अपना दावा करता रहा है और हाल ही में उसने पूरे अरुणाचल प्रदेश पर दावा करना शुरू कर दिया है।

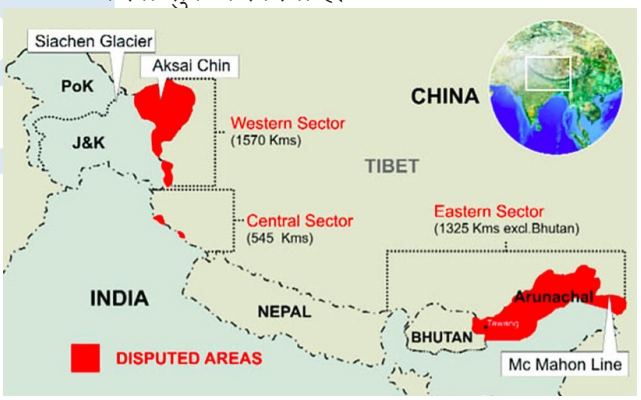

भारत-चीन संबंध

- 2025 भारत-चीन राजनयिक संबंधों के 75 वर्ष पूरे होने का प्रतीक है।
- **ऐतिहासिक तनाव:**
  - 1962 के युद्ध से संबंध तनावपूर्ण रहे, हाल के संघर्षों और अविश्वास ने इसे अधिक गंभीर किया।
  - 2020 में गलवान घाटी में दोनों सेनाओं के बीच संघर्ष ने संबंधों को खराब किया।
  - भारत ने चीनी निवेशों को सीमित किया, चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगाया और चीन के लिए उड़ानों को रोक दिया।

- **व्यापार संबंध:**
  - 2025 में भारत-चीन द्विपक्षीय व्यापार $155.6 अरब तक पहुँच गया, जो वर्ष-दर-वर्ष 12% से अधिक की वृद्धि दर्शाता है।
  - तनावों के बावजूद आर्थिक संबंध बढ़ते रहे।
- **प्रचलित तंत्र:**
  - विशेष प्रतिनिधि (SR) और परामर्श एवं समन्वय हेतु कार्यकारी तंत्र (WMCC) जैसे ढाँचे सीमा विवाद को संबोधित करने हेतु सक्रिय रहे।
- **हाल के विकास:**
  - 2024 में पूर्वी लद्दाख में सफलतापूर्वक सैनिकों की वापसी की घोषणा।
  - अक्टूबर 2024 में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने "परस्पर विश्वास, परस्पर सम्मान एवं परस्पर संवेदनशीलता" पर बल दिया।
  - 2025 में दोनों देशों ने प्रत्यक्ष उड़ानें पुनः शुरू कीं और भारतीय प्रधानमंत्री ने SCO शिखर सम्मेलन हेतु चीन का दौरा किया।

चिंताजनक क्षेत्र

- **सीमा तनाव जारी:**2,000 मील से अधिक लंबा अनसुलझा सीमा विवाद, बार-बार होने वाले संघर्षों से संबंध तनावपूर्ण।
- **सैन्य गतिरोध एवं अवसंरचना निर्माण:**दोनों पक्षों द्वारा बड़े पैमाने पर सैनिक तैनाती, तीव्र अवसंरचना निर्माण और सैन्यीकरण ने तनाव बढ़ाया।
- **चीन–पाकिस्तान गठजोड़:**चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) जो पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरता है, भारत की संप्रभुता को चुनौती देता है।
- **व्यापार असंतुलन:**भारत को चीन के साथ भारी व्यापार घाटा है, विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक्स, औषधि APIs, दूरसंचार उपकरण और सौर पैनलों में।
- **भारतीय महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति:**
  - **श्रीलंका:** हंबनटोटा बंदरगाह और तेल रिफ़ाइनरी में निवेश।
  - **नेपाल:** पोखरा हवाई अड्डे सहित अवसंरचना निवेश।
  - **बांग्लादेश:** ऋण समझौतों सहित चीन का बढ़ता प्रभाव।
  - **म्यांमार:** चीन-म्यांमार आर्थिक गलियारा, भारत के पड़ोस में चीन की उपस्थिति को सुदृढ़ करता है।

भारत के प्रयास

- **सैन्य तैयारी को सुदृढ़ करना:** LAC पर सैनिक तैनाती और अवसंरचना में वृद्धि, उन्नत हथियार प्रणालियों का समावेश एवं सीमा क्षेत्रों में निगरानी।
- **इंडो-पैसिफ़िक में रणनीतिक साझेदारी:** क्वाड (Quad) में सक्रिय भागीदारी और अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया एवं फ्रांस के साथ गहरे रक्षा सहयोग।
- **प्रौद्योगिकी एवं साइबर सुरक्षा उपाय:** दूरसंचार अवसंरचना में उच्च जोखिम वाले विक्रेताओं को बाहर करना और विश्वसनीय, स्वदेशी डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना।
- **समुद्री सुरक्षा:** नौसैनिक क्षमताओं का विस्तार और अमेरिका एवं जापान के साथ रक्षा संबंधों को सुदृढ़ करना।
- **अवसंरचना परियोजनाओं में भागीदारी:** वैश्विक अवसंरचना सुविधा और भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे जैसी परियोजनाओं में शामिल होकर आर्थिक विस्तार को सुदृढ़ करना।
- **व्यापार संबंध:** विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक्स और नवीकरणीय ऊर्जा में चीनी वस्तुओं पर निर्भरता कम करने का प्रयास।

आगे की राह

- भारत को सीमा क्षेत्रों और भारतीय महासागर क्षेत्र की सतत निगरानी बनाए रखनी चाहिए तथा उन भू-राजनीतिक एवं तकनीकी विकासों पर करीबी नज़र रखनी चाहिए जो राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर सकते हैं।
- आगे का मार्ग संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता पर दृढ़ता के साथ-साथ संतुलित कूटनीति और रणनीतिक स्वायत्तता में निहित है।

Source: TH

विकेंद्रीकरण के माध्यम से ग्रामीण रूपांतरण

संदर्भ

- विगत दशक में भारत के ग्रामीण विकास की दिशा यह संकेत देती है कि विखंडित कल्याणकारी प्रावधानों से एकीकृत, विकेंद्रीकृत और समुदाय-नेतृत्व वाले विकास प्रतिमान की ओर संरचनात्मक संक्रमण हुआ है।

शासन में विकेंद्रीकरण

- 73वाँ संविधान संशोधन (1992) ने पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) को बुनियादी स्तर पर लोकतंत्र के वाहक के रूप में संस्थागत किया, जिससे समुदायों को विकास पहलों की योजना, क्रियान्वयन और निगरानी में प्रत्यक्ष भागीदारी का अवसर मिला।
- भागीदारी को क्षमता निर्माण, प्रौद्योगिकी-सक्षम सहभागिता, सुदृढ़ सामुदायिक संस्थाओं और सहभागी योजना एवं बजट प्रक्रियाओं के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है।
- पंचायतों को प्रत्यक्ष वित्तीय हस्तांतरण 15वें वित्त आयोग (2021-2026) के अंतर्गत लगभग ₹2.36 लाख करोड़ से बढ़कर 16वें वित्त आयोग (2026-2031) के अंतर्गत लगभग ₹4.35 लाख करोड़ कर दिए गए हैं।

विकेंद्रीकरण की आवश्यकता

- **बुनियादी लोकतंत्र की गंभीरता:** ग्राम सभा जैसी संस्थाओं को सशक्त कर स्थानीय विकास पर निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है।
- **आवश्यकता-आधारित स्थानीय योजना:** स्थानीय निकाय कृषि, सिंचाई, पेयजल, स्वच्छता और ग्रामीण अवसंरचना से संबंधित क्षेत्रीय मुद्दों को बेहतर समझते हैं।
- **सेवा वितरण में सुधार:** महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम जैसी योजनाओं की अंतिम छोर तक पहुँच और निगरानी को सुदृढ़ करता है।
- **जवाबदेही और पारदर्शिता में वृद्धि:** निर्वाचित प्रतिनिधियों की नागरिकों से निकटता उत्तरदायित्व को बढ़ाती है और सामाजिक अंकेक्षण जैसी व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करती है।
- **सहकारी संघवाद को सुदृढ़ करना:** राज्य वित्त आयोगों और वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित अनुदानों के माध्यम से वित्तीय विकेंद्रीकरण को समर्थन देता है।

चुनौतियाँ

- **अपूर्ण अधिकार हस्तांतरण:** कई राज्यों ने 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के बावजूद कार्य, निधि और कार्मिकों का पूर्ण हस्तांतरण पंचायती राज संस्थाओं को नहीं किया है।
- **उच्च सरकारों पर वित्तीय निर्भरता:** PRIs वित्त आयोग और राज्य सरकारों द्वारा अनुशंसित अनुदानों पर अत्यधिक निर्भर हैं, स्वयं के राजस्व स्रोत सीमित हैं।
- **क्षमता संबंधी बाधाएँ:** प्रशिक्षित कर्मियों, तकनीकी विशेषज्ञता और प्रशासनिक क्षमता की कमी प्रभावी योजना एवं क्रियान्वयन में बाधा डालती है।
- **स्थानीय अभिजात्य वर्ग का प्रभुत्व और प्रतिनिधित्व का दुरुपयोग:** स्थानीय अभिजात्य वर्ग कभी-कभी निर्णय-निर्माण पर प्रभुत्वशाली हो जाते हैं; कुछ मामलों में महिला प्रतिनिधियों पर पुरुष परिजनों का परोक्ष नियंत्रण होता है।
- **ग्राम सभा का कमजोर संचालन:** ग्राम सभा में प्रायः कम भागीदारी, अनियमित बैठकें और नागरिकों में सीमित जागरूकता होती है।
- **जवाबदेही और पारदर्शिता की कमजोर व्यवस्थाएँ:** कमजोर अंकेक्षण, अनियमित सामाजिक अंकेक्षण और सीमित डिजिटल शासन भ्रष्टाचार एवं निधि के दुरुपयोग के जोखिम को बढ़ाते हैं।

ग्रामीण विकास में उपलब्धियाँ

- गरीबी में उल्लेखनीय कमी आई है; 2022-23 में अत्यधिक गरीबी 5.3% रही, जो वैश्विक औसत से कम है, और बहुआयामी गरीबी 11.28% तक घट गई है।
- महिला-नेतृत्व वाले समूह अंतिम छोर तक सेवा वितरण का आधार बने हैं, 90.09 लाख स्वयं सहायता समूहों (SHGs) में 10.05 करोड़ महिलाओं को संगठित किया गया है, जिन्हें 9 लाख सामुदायिक कार्यकर्ताओं का समर्थन प्राप्त है।
- ग्रामीण संपर्क लगभग सार्वभौमिक हो गया है; प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के लिए बजटीय आवंटन 2016-17 में ₹12,581 करोड़ से बढ़कर 2026-27 में ₹19,000 करोड़ हो गया (51% की वृद्धि)।

- आवास-आधारित सुरक्षा बड़े पैमाने पर विस्तारित हुई है; 11 वर्षों में 3.70 करोड़ ग्रामीण घर बनाए गए, PMAY-G (प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण) के बजटीय आवंटन में 266.1% की वृद्धि हुई।

सरकारी पहलें

- ग्रामीण विकास बजट आवंटन 2016-17 में ₹87,765 करोड़ से बढ़कर 2026-27 में ₹2.73 लाख करोड़ हो गया, जो 211% की वृद्धि है।
- **भूमि सुधार:**

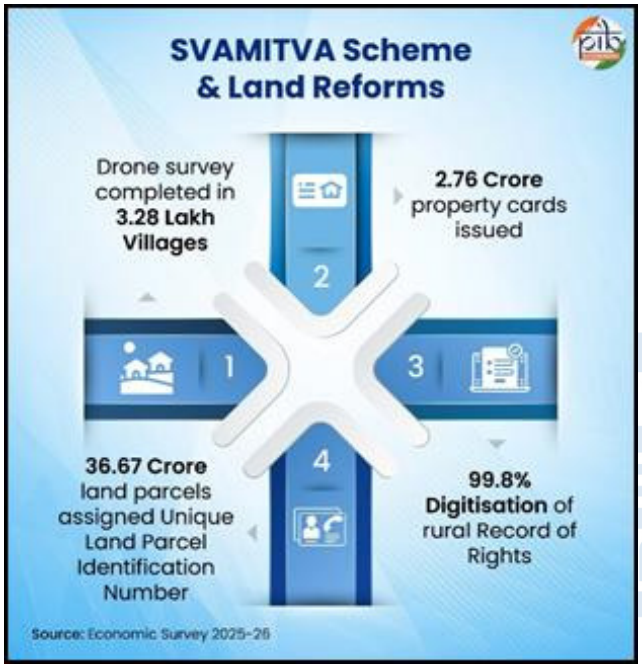

- मॉडल यूथ ग्राम सभा (MYGS) छात्रों को विद्यालयों में ग्राम सभा की प्रक्रियाओं का अनुकरण कर बुनियादी शासन से परिचित कर लोकतांत्रिक सहभागिता और नागरिक जागरूकता को बढ़ावा देती है।
- पुनर्गठित राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (RGSA) नेतृत्व विकास, ई-गवर्नेंस और गहन संवैधानिक अधिकार हस्तांतरण के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं की संस्थागत क्षमता को सुदृढ़ कर विकेंद्रीकृत शासन को सुदृढ़ करता है।
- **महिला-नेतृत्व वाली संस्थाएँ ग्रामीण रूपांतरण की प्रेरक शक्ति:** महिला-नेतृत्व वाली संस्थाएँ दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) का केंद्रीय तत्व हैं, जो महिलाओं को ग्रामीण रूपांतरण की प्रमुख प्रेरक शक्ति के रूप में स्थापित करती हैं।

- सामुदायिक संसाधन व्यक्ति (CRPs), जैसे बैंक सखियाँ, कृषि सखियाँ, पशु सखियाँ और उद्यम प्रोत्साहन CRPs, महिला-नेतृत्व वाली सामुदायिक संस्थाओं के सुचारु संचालन को सुगम बनाते हैं।

निष्कर्ष

- विगत दशक में भारत के ग्रामीण विकास की दिशा यह संकेत देती है कि विखंडित कल्याणकारी प्रावधानों से एकीकृत, विकेंद्रीकृत और समुदाय-नेतृत्व वाले विकास प्रतिमान की ओर संरचनात्मक संक्रमण हुआ है।
- सामूहिक रूप से, ये सुधार ग्रामीण भारत को केवल विकास हस्तक्षेपों का प्राप्तकर्ता नहीं, बल्कि समावेशी विकास, लोकतांत्रिक शासन और दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक स्थिरता का प्रमुख प्रेरक बनाते हैं।

Source: PIB

खंडित वैश्विक व्यवस्था में भारत की विदेश नीति का पुनर्परिनियोजन

संदर्भ

- संसद में प्रधानमंत्री मोदी ने स्वीकार किया कि नियम-आधारित बहुपक्षीयता से शक्ति-प्रधान, लेन-देन आधारित भू-राजनीति की ओर एक संरचनात्मक परिवर्तन हो रहा है।

बहुपक्षीयता का क्षरण

- **सहमति-आधारित संस्थाओं का पतन:** दशकों तक संयुक्त राष्ट्र और विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाएँ सामूहिक निर्णय-निर्माण एवं कूटनीति के माध्यम से वैश्विक नियम-निर्माण का आधार रहीं।
  - किंतु यह नियम-आधारित व्यवस्था कमजोर हो गई है क्योंकि प्रमुख शक्तियाँ सहमति तंत्र को दरकिनार कर रही हैं, जिससे संस्थाएँ कम प्रभावी हो रही हैं।
- **लेन-देन आधारित शक्ति राजनीति का उदय:** बहुपक्षीय मंचों को लेन-देन आधारित कूटनीति प्रतिस्थापित कर रही है, जहाँ शक्ति और द्विपक्षीय दबाव सामूहिक मानदंडों से अधिक महत्व रखते हैं।
  - अमेरिका द्वारा एकतरफा शुल्क लगाना और सहयोगी ढाँचों से पीछे हटना इस प्रवृत्ति को दर्शाता है।
- **प्रतिस्पर्धी भू-अर्थशास्त्र का उदय:** चीन 120 से अधिक देशों का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया है और उसने आपूर्ति श्रृंखलाओं एवं बाज़ारों का विविधीकरण किया है।
  - इसके प्रत्युत्तर में अमेरिका ने तकनीकी नियंत्रण और आपूर्ति श्रृंखला पुनर्गठन को प्राथमिकता दी है।
  - इस परिवर्तित वातावरण में भारत जैसे मध्यम शक्तियों को आर्थिक संरेखण के बदलावों के कारण अधिक संवेदनशीलता का सामना करना पड़ रहा है।

रणनीतिक स्वायत्तता का विकास

- **शीत युद्ध की उत्पत्ति:** रणनीतिक स्वायत्तता का उद्भव भारत के गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नेतृत्व के दौरान हुआ। इससे भारत को शीत युद्ध के दौरान गुट राजनीति से बचने का अवसर मिला।
- **शीत युद्धोत्तर संक्रमण:** 1991 के बाद यह सिद्धांत संरचनात्मक से अधिक घोषणात्मक हो गया। भारत ने 2017 में चतुष्कोणीय सुरक्षा संवाद (Quad) में भाग लिया, जो इंडो-पैसिफ़िक सुरक्षा चिंताओं के साथ संरेखण का संकेत था।
  - **रूस से रक्षा खरीद:** भारत ने अमेरिकी प्रतिबंधों के दबाव के बावजूद रूस से S-400 प्रणाली खरीदी।
- **स्विंग स्टेट विमर्श:** अमेरिकी विश्लेषक भारत को अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता में बढ़ते हुए "स्विंग स्टेट" के रूप में वर्णित करते हैं।

भारत की वर्तमान विदेश नीति

- भारत की वर्तमान विदेश नीति बहु-संरेखण, आर्थिक कूटनीति और रणनीतिक लचीलापन से परिभाषित है। इसके प्रमुख आयाम हैं:
  - अमेरिका और इंडो-पैसिफ़िक साझेदारों के साथ रक्षा एवं प्रौद्योगिकी सहयोग को बेहतर करना।
  - रूस के साथ रक्षा और ऊर्जा संबंध बनाए रखना।
  - चीन के साथ प्रतिस्पर्धा और संवाद को संतुलित करना तथा निरोधक नीति अपनाना।
  - "पड़ोस प्रथम" नीति को बढ़ावा देना और दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय संपर्क को सुदृढ़ करना।
  - वैश्विक संस्थाओं में सुधार का समर्थन करना ताकि वे समकालीन शक्ति वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करें।
- भारत का दृष्टिकोण स्वायत्तता को संरक्षित करते हुए उन साझेदारियों का विस्तार करना है जो आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति को प्रोत्साहित करें।

आगे की राह

- **लचीला बहुपक्षीय संलग्नता:** खंडित व्यवस्था में लचीले गठबंधन और मुद्दा-आधारित संरेखण भारत की रणनीतिक स्थिति को सुरक्षित रख सकते हैं।
  - BRICS जैसे मंच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने और वैश्विक वित्तीय शासन में सुधार के अवसर प्रदान करते हैं।
- **विविधीकृत व्यापार रणनीति:** भारत का निर्यात कुछ चुनिंदा बाज़ारों में केंद्रित है। किसी एक साझेदार पर अत्यधिक निर्भरता कम करने के लिए ASEAN, अफ्रीका और पश्चिम एशिया के साथ सुदृढ़ व्यापारिक संबंध आवश्यक हैं।

- व्यापक आर्थिक साझेदारियों का विस्तार और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकरण शुल्क अस्थिरता के विरुद्ध लचीलापन बढ़ाएगा।

Source: TH

2070 तक भारत की ऊर्जा संरचना में नवीकरणीय स्रोतों का प्रभुत्व

संदर्भ

- नीति आयोग द्वारा प्रकाशित अध्ययन *"विकसित भारत और नेट ज़ीरो की ओर परिदृश्य"* में अनुमान लगाया गया है कि 2070 तक भारत की विद्युत संरचना कोयला-प्रधानता से नवीकरणीय ऊर्जा नेतृत्व की ओर स्थानांतरित होगी।

भारत का वर्तमान विद्युत परिदृश्य

- कोयला अभी भी भारत की ऊर्जा प्रणाली की रीढ़ है, जो लगभग 74% विद्युत उत्पादन में योगदान देता है और विश्वसनीय एवं कम लागत वाली आधार-भार आपूर्ति सुनिश्चित करता है।
- IRENA RE सांख्यिकी 2025 के अनुसार, वैश्विक स्तर पर भारत सौर ऊर्जा स्थापित क्षमता में तीसरे स्थान पर, पवन ऊर्जा क्षमता में चौथे स्थान पर और कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में भी चौथे स्थान पर है।
- भारत की कुल स्थापित क्षमता 513 GW है, जिसमें 48% जीवाश्म-आधारित, 50% नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से और 1.7% परमाणु ऊर्जा से है।
- हालाँकि, वास्तविक उत्पादन में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी केवल 2013-14 में 19.6% से बढ़कर 2024-25 में 22% हुई है, जो उपयोग संबंधी चुनौतियों को दर्शाती है।
- **वर्तमान नीति परिदृश्य (CPS) के अंतर्गत अनुमान:**
  - 2024-25 में लगभग 20% से बढ़कर 2070 तक विद्युत उत्पादन में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी 80% से अधिक हो सकती है।
  - 2070 तक कोयले की हिस्सेदारी तीव्रता से घटकर 6–10% तक रह सकती है।

नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन में बाधाएँ

- **निम्न क्षमता उपयोग कारक (CUF):** स्वच्छ ऊर्जा स्रोत अस्थिर और मौसम-निर्भर होते हैं। उच्च स्थापित क्षमता के बावजूद वास्तविक उत्पादन कम रहता है।
  - उदाहरण: सौर CUF ~20%, पवन CUF ~25–30%, कोयला CUF ~60%, परमाणु CUF ~80%।
- **आधार-भार के लिए कोयले पर निर्भरता:** भारत की विद्युत मांग का 75% से अधिक कोयला पूरा करता है, विशेषकर रात में जब सौर ऊर्जा उपलब्ध नहीं होती।
- **भंडारण और प्रसारण सीमाएँ:** ग्रिड-स्तरीय बैटरी भंडारण की कमी दिन में अतिरिक्त सौर ऊर्जा को संग्रहित करने से रोकती है।
  - प्रसारण योजना नवीकरणीय ऊर्जा स्थापना की गति के अनुरूप नहीं है।
- **समय-असंवेदनशील शुल्क संरचना:** भारत में वर्तमान में समय-आधारित मूल्य निर्धारण (ToD) का अभाव है, जिससे दिन के समय सौर ऊर्जा उपभोग को प्रोत्साहन नहीं मिलता।
- **भूमि और नियामक बाधाएँ:** बड़े पैमाने पर सौर या हाइब्रिड परियोजनाओं हेतु भूमि एकत्रीकरण की समस्या।
  - हाइब्रिड नवीकरणीय प्रणालियों और भंडारण अवसंरचना के लिए नियामक स्वीकृतियों में विलंब।

स्वच्छ ऊर्जा उपयोग में सुधार हेतु सरकारी पहलें

- **ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर (GEC):** उत्पादन स्थलों से माँग केंद्रों तक नवीकरणीय ऊर्जा को कुशलतापूर्वक पहुँचाने हेतु प्रसारण अवसंरचना को सुदृढ़ करना।
- **पीएम-कुसुम योजना:** ग्रामीण क्षेत्रों में सौर पंप और ग्रिड-संलग्न सौर संयंत्रों की स्थापना को बढ़ावा देना, जिससे डीज़ल उपयोग घटे एवं किसानों को सहयोग मिले।
- **राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन:** रिफ़ाइनिंग, इस्पात और उर्वरक जैसे क्षेत्रों में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने हेतु हरित हाइड्रोजन के उत्पादन एवं उपयोग को बढ़ावा देना।
- **उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजना:** उच्च दक्षता वाले सौर फोटोवोल्टिक (PV) मॉड्यूल और उन्नत बैटरी भंडारण प्रणालियों के घरेलू निर्माण हेतु वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करना।
- **नवीकरणीय ऊर्जा हाइब्रिड नीति:** सौर और पवन ऊर्जा को एक ही स्थान पर संयोजित करने वाली परियोजनाओं को प्रोत्साहित करना, जिससे क्षमता उपयोग एवं विश्वसनीयता बढ़े।

आगे की राह

- **ग्रिड आधुनिकीकरण और स्मार्ट प्रबंधन:** वास्तविक समय माँग-आपूर्ति संतुलन के साथ स्मार्ट ग्रिड में निवेश करना।
  - समय-आधारित मूल्य निर्धारण सक्षम करना, विशेषकर दिन के समय सौर ऊर्जा उपयोग को बढ़ावा देने हेतु।
- **बैटरी और भंडारण अवसंरचना:** बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणालियों (BESS) की तैनाती को VGF (व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण) या PLI के माध्यम से तीव्र करना।
  - सौर-पवन-जलविद्युत के साथ BESS युक्त हाइब्रिड परियोजनाओं को शीघ्रता से आगे बढ़ाना।
- **विकेंद्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा:** रूफटॉप सौर, सौर पंप और मिनी-ग्रिड को बढ़ावा देना ताकि आधार-भार दबाव कम हो।
- **शुल्क और बाज़ार संरचना का पुनर्गठन:** पीक और ऑफ-पीक अवधि हेतु भिन्न शुल्क लागू करना।
  - ऊर्जा विनिमय पर खुले पहुँच वाले उद्योगों हेतु हरित ऊर्जा बाज़ार स्थापित करना।
- **रणनीतिक स्तंभ के रूप में परमाणु ऊर्जा:** कम-कार्बन आधार-भार विद्युत प्रदान करने हेतु परमाणु क्षमता को चरणबद्ध और वित्तीय रूप से सतत रूप से बढ़ाना।
  - उन्नत रिएक्टरों और छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों (SMRs) को प्राथमिकता देना ताकि लचीली तैनाती और बेहतर सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

Source: IE

जनसंख्या-स्तरीय प्रभाव हेतु भारत का कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) स्टैक

समाचार में

- भारत नई दिल्ली में *इंडिया AI इम्पैक्ट समिट* की मेज़बानी कर रहा है, जिसका केंद्र बिंदु व्यापक नीतिगत चर्चाओं के बजाय व्यावहारिक एआई तैनाती और मापनीय सामाजिक परिणाम हैं।

विकास और अनुप्रयोग

- **कृषि:**
  - एआई-संचालित परामर्श उपकरणों का उपयोग बुवाई निर्णयों का मार्गदर्शन करने, इनपुट उपयोग को अनुकूलित करने और उत्पादन बढ़ाने के लिए किया जा रहा है।
  - एआई नवाचार किसानों को डेटा-आधारित, सतत निर्णय लेने में सहायता कर रहे हैं।
  - *निओपर्क(Neoperk)* त्वरित मृदा स्वास्थ्य विश्लेषण प्रदान करता है ताकि उर्वरक उपयोग को अनुकूलित किया जा सके।
    - *कॉटनऐस(CottonAce)* कीट पहचान और स्थानीयकृत कीटनाशक मार्गदर्शन उपलब्ध कराता है।
    - *निको रोबोटिक्स* वास्तविक समय में कीट और खरपतवार नियंत्रण सक्षम करता है।
    - *क्रॉपिन* खेत निगरानी, ऋण विश्लेषण और जलवायु-स्मार्ट पूर्वानुमान खेती हेतु डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करता है।
- **शिक्षा:**
  - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने एआई साक्षरता और अनुप्रयुक्त अधिगम को CBSE पाठ्यक्रम, DIKSHA डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और *YUVAi* जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से शामिल किया है।
  - उद्देश्य है कि एआई कौशल को व्यापक स्तर पर विकसित किया जाए।
  - *PadhaiWithAI* व्यक्तिगत गणित समर्थन प्रदान करता है।
  - *रॉकेट लर्निंग* का एआई साथी अप्पू(*Appu*) बच्चों को व्हाट्सएप के माध्यम से इंटरैक्टिव गतिविधियाँ उपलब्ध कराता है।
  - *बेलगावी स्मार्ट सिटी* के डीप लर्निंग ई-बुक्स उपयोगकर्ता व्यवहार के अनुसार वास्तविक समय में अनुकूलित होते हैं।
- **स्वास्थ्य:**
  - एआई उपकरणों का उपयोग क्षय रोग, कैंसर, तंत्रिका संबंधी विकारों आदि की प्रारंभिक पहचान हेतु किया जा रहा है।
  - एआई-आधारित थर्मल इमेजिंग कम लागत वाले, गैर-आक्रामक स्तन कैंसर स्क्रीनिंग में प्रयुक्त हो रही है।
  - *Qure.ai* एक्स-रे और सीटी स्कैन का त्वरित विश्लेषण करता है।

- *AISteth* हृदय और फेफड़ों की बीमारियों का सटीक दूरस्थ निदान सक्षम करता है।
- **न्यायिक प्रशासन:**
  - *ई-कोर्ट्स फेज़ III* के अंतर्गत मशीन लर्निंग उपकरण अनुवाद, केस शेड्यूलिंग और वर्कफ़्लो प्रबंधन में प्रयुक्त हो रहे हैं।
- **पर्यावरण:** भारत मौसम विज्ञान विभाग एआई का उपयोग वर्षा, चक्रवात, कोहरा, बिजली और वनाग्नि जोखिम पूर्वानुमान हेतु कर रहा है।
  - *मौसम GPT* किसानों और आपदा प्रतिक्रिया एजेंसियों को सहयोग प्रदान करता है।

भारत का वर्तमान दृष्टिकोण और पहलें

- आर्थिक सर्वेक्षण 2026 ने बल दिया कि भारत की एआई रणनीति को मानव कल्याण और आर्थिक समावेशन को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **इंडियाएआई मिशन:** 12 भारत-विशिष्ट एआई मॉडल को सब्सिडी युक्त कंप्यूट समर्थन।
- **भारतजेन:** भारत-केंद्रित फाउंडेशन और मल्टीमॉडल मॉडल विकसित करता है।
- **इंडियाएआईकोश(IndiaAIKosh):** 20 क्षेत्रों में 54 संगठनों से 5,722 डेटासेट और 251 एआई मॉडल उपलब्ध कराता है।
- **भाषिणी:** 350+ एआई मॉडल भाषण पहचान, अनुवाद, OCR, टेक्स्ट-टू-स्पीच और भाषा पहचान हेतु।
- **सर्वम एआई:** स्वदेशी एआई मॉडल विकसित कर रहा है, जैसे *Sarvam Vision*।
- **कंप्यूट क्षमता और सेमीकंडक्टर महत्वाकांक्षाएँ:**
  - ₹10,300+ करोड़ एआई कंप्यूट हेतु आवंटित।
  - 38,000 GPUs और 1,050 TPUs की साझा पहुँच।
  - 3,000 प्रोसेसर वाला सुरक्षित GPU क्लस्टर।
- ***भारत सेमीकंडक्टर मिशन:*** फैब्रिकेशन, पैकेजिंग और स्वदेशी प्रोसेसर (शक्ति, वेगा) के लिए ₹76,000 करोड़।
- ***राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन:*** IITs, IISERs, नेशनल लैब्स के ज़रिए 40+ पेटाफ्लॉप्स लगाए गए; PARAM Siddhi-AI और AIRAWAT जैसे सिस्टम NLP, मौसम, दवा की खोज में सहायता करते हैं।
- **डिजिटल अवसंरचना और डेटा केंद्र:**
  - राष्ट्रीय स्तर पर ऑप्टिकल फाइबर और 5G कवरेज।
  - भारत के पास वैश्विक डेटा केंद्र क्षमता का ~3% (960 MW), जो 2030 तक 9.2 GW तक पहुँचने का अनुमान है।
  - प्रमुख केंद्र: मुंबई–नवी मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई, दिल्ली NCR, पुणे, कोलकाता।
- **ऊर्जा और स्थिरता:**
  - FY 2025–26 में शिखर माँग 242.49 GW रही।
  - कुल उत्पादन क्षमता 509.7 GW, जिसमें आधे से अधिक गैर-जीवाश्म स्रोतों से।
  - 57 GW पंप्ड स्टोरेज और 43,220 MWh बैटरी स्टोरेज योजनाएँ।
  - *SHANTI Act* परमाणु ऊर्जा को सतत निम्न-कार्बन स्रोत के रूप में बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- भारत की एआई रणनीति मानव कल्याण, आर्थिक समावेशन और संदर्भ-विशिष्ट नवाचार पर बल देती है।
- सरकार एक उत्प्रेरक और पारिस्थितिकी तंत्र संयोजक की भूमिका निभाती है, घरेलू एआई की खरीद को सुगम बनाकर, विश्वास हेतु मानक स्थापित कर, अनुप्रयोगों को *भारत AI एप्लीकेशन स्टैक* में एकीकृत कर और शासन को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सुनिश्चित कर।

Source :IE

संक्षिप्त समाचार

केरल द्वारा बैसिलस सबटिलिस (Bacillus Subtilis) को 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित

संदर्भ

- केरल आधिकारिक रूप से "राज्य सूक्ष्मजीव" घोषित करने वाला पहला भारतीय राज्य बन गया है, जिसने *बैसिलस सबटिलिस* को चुना है, जो एक लाभकारी, मृदा में रहने वाला जीवाणु है।

बैसिलस सबटिलिस के बारे में

- यह एक गैर-रोगजनक, छड़ी-आकार का, ग्राम-पॉज़िटिव जीवाणु है, जो सामान्यतः मृदा , जल और मानव आंत में पाया जाता है।
- *बैसिलस सबटिलिस* एक प्रोबायोटिक या लाभकारी जीवाणु है, जो आंत स्वास्थ्य सुधारने और प्रतिरक्षा को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- कृषि में इसका व्यापक उपयोग जैव-उर्वरक और जैव-नियंत्रण एजेंट के रूप में होता है, जिससे फसल उत्पादकता बढ़ती है और पौधों की बीमारियाँ कम होती हैं।
- इसकी सहनशीलता और बीजाणु-निर्माण क्षमता के कारण इसके औद्योगिक और जैव-प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग महत्वपूर्ण हैं।

माइक्रोबायोम में उत्कृष्टता केंद्र

- *माइक्रोबायोम उत्कृष्टता केंद्र (CoEM)*, केरल सरकार द्वारा *केरल राज्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण परिषद* के अंतर्गत स्थापित किया गया है।
- तिरुवनंतपुरम में स्थित यह भारत का प्रथम बहु-क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान है, जो विशेष रूप से माइक्रोबायोम अध्ययन हेतु समर्पित है।

स्रोत: TH

चतुष्कोणीय सुरक्षा संवाद (Quad)

संदर्भ

- हाल ही में वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारियों की टिप्पणियों में *क्वाड* को "अत्यंत महत्वपूर्ण मंच" और भारत को "सक्रिय सहभागी" बताया गया है, जो भारत की इंडो-पैसिफ़िक रणनीति में इस समूह की केंद्रीयता को रेखांकित करता है।

चतुष्कोणीय सुरक्षा संवाद (QUAD)

- यह भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान का एक अनौपचारिक बहुपक्षीय समूह है, जिसका उद्देश्य मुक्त एवं खुले इंडो-पैसिफ़िक क्षेत्र में सहयोग करना है।
- **उत्पत्ति:** Quad की शुरुआत 2004 के हिंद महासागर सुनामी के बाद एक ढीले साझेदारी रूप में हुई, जब चारों देशों ने प्रभावित क्षेत्र में मानवीय और आपदा सहायता प्रदान की।
- इसे 2007 में जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने औपचारिक रूप दिया, किंतु बाद में यह निष्क्रिय हो गया।
- एक दशक बाद 2017 में इसे पुनर्जीवित किया गया, जो क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव के प्रति बदलते दृष्टिकोण को दर्शाता है।

भारत के लिए रणनीतिक महत्व

- **समुद्री सुरक्षा और इंडो-पैसिफ़िक:** क्वाड समुद्री संचार मार्गों (SLOCs) की सुरक्षा में समन्वय को सुदृढ़ करता है।
  - यह भारत की *SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास)* दृष्टि को पूरक करता है।
- **क्षेत्रीय शक्ति असमानता का संतुलन:** क्वाड को दक्षिण चीन सागर और व्यापक इंडो-पैसिफ़िक में चीन की बढ़ती आक्रामकता के प्रत्युत्तर के रूप में देखा जाता है।
- हालाँकि, भारत का मानना है कि क्वाड कोई सैन्य गठबंधन नहीं, बल्कि सहयोगात्मक सुरक्षा का मंच है।

स्रोत: TH

अफ्रीकी संघ

संदर्भ

- अफ्रीकी संघ इथियोपिया में अपना वार्षिक शिखर सम्मेलन आयोजित कर रहा है, जिसमें महाद्वीप के भविष्य पर चर्चा होगी, क्योंकि संगठन व्यापक असंतोष का सामना कर रहा है।

अफ्रीकी संघ

- अफ्रीकी संघ (AU) एक महाद्वीपीय संगठन है, जिसमें अफ्रीकी महाद्वीप के 55 सदस्य राष्ट्र शामिल हैं।
- इसे 2002 में आधिकारिक रूप से *अफ्रीकी एकता संगठन(OAU, 1963-1999)* के उत्तराधिकारी के रूप में स्थापित किया गया।
- **उद्देश्य:** अफ्रीका की क्षमता को साकार करना और अफ्रीकी राज्यों के बीच सहयोग एवं एकीकरण को बढ़ावा देना, जिससे अफ्रीका की वृद्धि एवं आर्थिक विकास सुनिश्चित हो।
- **मुख्यालय:** अदीस अबाबा, इथियोपिया।

- AU की पहलों में *अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र(AfCFTA)* समझौता शामिल है, जिसका उद्देश्य पूरे महाद्वीप में वस्तुओं और सेवाओं के लिए एकल बाज़ार बनाना है।
- *एजेंडा 2063* एक रणनीतिक ढाँचा है, जो आगामी 50 वर्षों में महाद्वीप के सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण पर केंद्रित है।

स्रोत: IE

सेवा तीर्थ

समाचार में

- प्रधानमंत्री ने नई दिल्ली में *सेवा तीर्थ* परिसर का उद्घाटन किया, साथ ही *कर्तव्य भवन-1 और 2* का भी।

सेवा तीर्थ और कर्तव्य भवन-1 एवं 2

- *सेवा तीर्थ* में प्रधानमंत्री कार्यालय, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय, कैबिनेट सचिवालय आदि स्थित हैं, जो पहले विभिन्न स्थानों पर फैले हुए थे।
  - यह आधुनिक और भविष्य-उन्मुख सुविधाओं में प्रशासनिक कार्यों का एकीकरण करता है।
- *कर्तव्य भवन-1 और 2* में वित्त मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय सहित कई प्रमुख मंत्रालय स्थित हैं।
  - दोनों भवन परिसरों में डिजिटल रूप से एकीकृत कार्यालय, संरचित जन-संपर्क क्षेत्र और केंद्रीकृत स्वागत सुविधाएँ हैं।

महत्व

- ये विशेषताएँ सहयोग, दक्षता, सुगम शासन, नागरिक सहभागिता में सुधार और कर्मचारियों के कल्याण को बढ़ावा देंगी।

स्रोत: AIR

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) जनवरी, 2026 (अस्थायी) आधार वर्ष 2024=100 जारी

संदर्भ

- सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने आधार 2024=100 के साथ अस्थायी उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) जारी किया है।

परिचय

- आधार वर्ष 2012 से 2024 में संशोधित किया गया है, जो *गृहस्थ उपभोग व्यय सर्वेक्षण 2023-24* पर आधारित है।
  - 6 समूहों के स्थान पर 12 प्रभाग, *COICOP 2018* के अनुसार।
  - *COICOP* संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी प्रभाग द्वारा विकसित घरेलू व्यय का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण है।
  - इसका उद्देश्य वस्तुओं और सेवाओं की समान श्रेणियाँ प्रदान करना है, जिससे CPI विश्व स्तर पर तुलनीय हो सके।

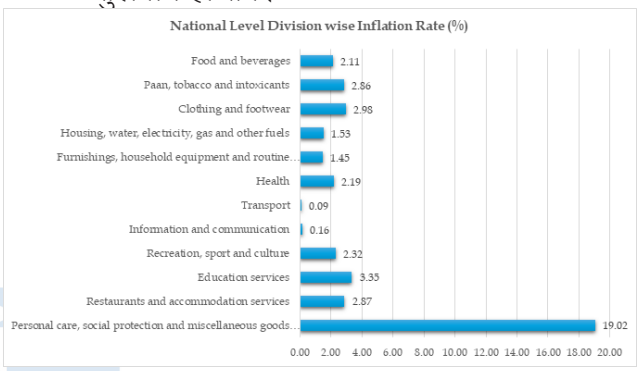

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI)

- CPI समय के साथ वस्तुओं और सेवाओं की टोकरी पर उपभोक्ताओं द्वारा चुकाए गए औसत मूल्य परिवर्तन को मापता है, अर्थात खुदरा मुद्रास्फीति को ट्रैक करता है।
  - जीवन-यापन की लागत और क्रय शक्ति को ट्रैक करता है।
  - इसमें खाद्य, आवास, वस्त्र, परिवहन आदि शामिल हैं।
  - यह मासिक प्रकाशित होता है। पूर्व आधार वर्ष: 2012, जिसे अब 2024 में संशोधित किया गया है।
  - **जारीकर्ता:** NSO, MoSPI

आधार वर्ष का संशोधन

- इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सूचकांक वर्तमान घरेलू उपभोग पैटर्न, मूल्य संरचना और भारतीय अर्थव्यवस्था की विकसित होती प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता रहे।
  - **आधार वर्ष** एक चयनित वर्ष होता है जिसे संदर्भ बिंदु (सूचकांक = 100) के रूप में लिया जाता है, ताकि समय के साथ कीमतों की तुलना की जा सके।

- यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह मापने में सहायता मिलती है कि कीमतें कितनी बढ़ी या घटी हैं और मुद्रास्फीति के आँकड़े प्रासंगिक बने रहते हैं।
- आधार वर्ष अद्यतन अभ्यास मुख्यतः CPI वस्तु टोकरी का पुनरीक्षण और नवीनतम *गृहस्थ उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES)* के आधार पर वस्तुओं के भार को अद्यतन करने से संबंधित है।

स्रोत: PIB

मैंग्रोव क्लैम

समाचार में

- *ICAR–केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान (CMFRI)* ने *मैंग्रोव क्लैम (गेलोइना एरोसा)* का नियंत्रित परिस्थितियों में प्रेरित प्रजनन सफलतापूर्वक प्राप्त किया है।

मैंग्रोव क्लैम

- इसे सामान्यतः *मड क्लैम* कहा जाता है और यह पारिस्थितिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- यह सामान्यतः ज्वारीय मैंग्रोव क्षेत्रों में कार्बनिक-समृद्ध पंकयुक्त सब्सट्रेट में निवास करता है।
- यह दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के मैंग्रोव और मुहाना पारिस्थितिक तंत्रों में वितरित एक घटती द्विपटली प्रजाति है।
- भारत के कई हिस्सों में यह एक लोकप्रिय स्थानीय व्यंजन है, विशेषकर उत्तरी केरल में, जहाँ इसे "कंदल कक्का" कहा जाता है।

स्रोत: DD

लीड बैंक योजना (LBS) हेतु संशोधित दिशा-निर्देश

समाचार में

- RBI के प्रस्तावित दिशा-निर्देशों का उद्देश्य लीड बैंक योजना को सुदृढ़ और सुव्यवस्थित करना है, जिसमें विभिन्न समितियों की संरचना, सदस्यता एवं भूमिकाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है।

लीड बैंक योजना (LBS)

- LBS की उत्पत्ति 1969 के *गाडगिल अध्ययन समूह* से हुई, जिसने वाणिज्यिक बैंकों की ग्रामीण उपस्थिति की कमी को उजागर किया और ग्रामीण बैंकिंग एवं ऋण संरचना के विकास हेतु "क्षेत्रीय दृष्टिकोण" की सिफारिश की।
- *नरीमन समिति* ने प्रस्ताव दिया कि प्रत्येक सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक विशिष्ट जिलों में "लीड बैंक" के रूप में कार्य करे।
- RBI ने दिसंबर 1969 में LBS शुरू किया, ताकि जिला स्तर पर बैंकों और विकास एजेंसियों का समन्वय हो सके।
- इसका उद्देश्य प्राथमिकता और ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण प्रवाह को बढ़ाना और समग्र ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित करना है।

RBI के प्रस्तावित दिशा-निर्देश

- राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (SLBCs) और लीड जिला प्रबंधक कार्यालयों के कार्य को सुदृढ़ करना।
- प्रत्येक जिले में एक वाणिज्यिक बैंक को लीड बैंक के रूप में नामित किया जाएगा।
- SLBC संयोजक बैंक राज्य स्तर पर बैंकिंग गतिविधियों की देखरेख करेंगे।
- योजना तीन-स्तरीय संरचना के माध्यम से संचालित होगी:
  - *ब्लॉक स्तरीय बैंकर्स समिति (BLBC)*
  - *जिला परामर्श समिति (DCC)* और *जिला स्तरीय समीक्षा समिति (DLRC)*
  - *SLBC/UTLBC* राज्य/केंद्र शासित प्रदेश स्तर पर।
- बैंकों को ग्रामीण और अर्ध-शहरी शाखाओं में 60% क्रेडिट-डिपॉज़िट अनुपात प्राप्त करने का लक्ष्य रखना होगा।

स्रोत: TH

■■■■